

श्रीमद्भागवत नवम स्कन्ध अध्याय 12: कुश का वंश

24 September 2026

🙏 पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



अयोध्या के सिंहासन से सूर्यवंश की दीर्घ परम्परा कुश के पुत्रों के माध्यम से आगे बहती है — ऋषि, योगी और योद्धा — जब शुकदेव राजा परीक्षित को उन राजाओं का वर्णन करते हैं जो हो चुके, और जो अभी होने हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विज्ञम में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं एवं शिक्षाओं की एक श्रद्धापूर्ण यात्रा। नवम स्कन्ध का यह बारहवाँ अध्याय एक वंशावली है — भगवान् रामचन्द्र के पुत्र कुश से उत्पन्न राजाओं की सूची, जो भगवान् के अपने शासन के पश्चात् इक्ष्वाकु के सूर्यवंश को आगे ले जाती है। शुकदेव राजा परीक्षित को इन राजाओं के नाम बताते हैं, भूत एवं भविष्य दोनों के, और इस दीर्घ

परम्परा में कुछ विशेष व्यक्ति चमकते हैं: हिरण्यनाभ, योग के एक महान् आचार्य; मरु, योग में सिद्ध, जो अभी भी कलापग्राम में स्थित हैं और एक दिन सूर्यवंश को पुनर्जीवित करेंगे; और बृहद्बल, जो महाभारत के महायुद्ध में गिरे। अध्याय कलियुग में इस वंश के अन्तिम राजा सुमित्र का नाम लेकर समाप्त होता है। यद्यपि यह नामों की सूची है, यह एक शान्त शिक्षा धारण करती है: कि राजवंश उठते और मिटते हैं, फिर भी पवित्र बीज सुरक्षित रहता है, और आत्मा का ज्ञान, गुरु से शिष्य को सौंपा जाता हुआ, प्रत्येक सिंहासन से अधिक टिकता है।

अध्याय-परिचय

- ग्रन्थ: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 9 (नवम स्कन्ध)
- अध्याय: 12 (द्वादश अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: भगवान् रामचन्द्र के पुत्र कुश का वंश
- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित को कथा सुनाते हुए — सम्पूर्ण कथा सूत गोस्वामी द्वारा नैमिषारण्य में शौनक ऋषि एवं ऋषि-समुदाय को सुनाई गई
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: इक्ष्वाकु का सूर्यवंश, भगवान् रामचन्द्र के पुत्र कुश से उतरती परम्परा में
- केन्द्रीय विषय: कुश से उत्पन्न राजाओं की वंशावली, योगाचार्य हिरण्यनाभ, कलापग्राम के योगी मरु, और बृहद्बल सहित, अन्तिम राजा सुमित्र तक
- मुख्य श्लोक-परास: नवम स्कन्ध, अध्याय 12, श्लोक 1-16
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

कुश का वंश

शुकदेव ने सूर्यवंश का वर्णन आगे बढ़ाया। कुश के पुत्र अतिथि थे; उनसे निषध, और फिर नभ; फिर पुण्डरीक, जिनके पुत्र क्षेमधन्वा; और उनसे देवनीक, अनीह, परियात्र, बलस्थल, और वज्रनाभ, जिनके विषय में कहा जाता है कि वे सूर्यदेव की किरण से उत्पन्न हुए।

श्रीशुक उवाच

कुशस्य चातिथिस्तस्मान्निषधस्तत्सुतो नभः ।

पुण्डरीकोऽथ तत्पुत्रः क्षेमधन्वाभवत्ततः ॥ १ ॥

śrī-śuka uvāca kuśasya cātithis tasmān niṣadhas tat-suto nabhaḥ puṇḍariko 'tha tat-putraḥ kṣemadhanvābhavat tataḥ

अर्थ: शुकदेव ने कहा: कुश के पुत्र अतिथि थे, और उनसे निषध हुए, जिनके पुत्र नभ; फिर पुण्डरीक हुए, जिनके पुत्र क्षेमधन्वा। (नवम स्कन्ध, अध्याय 12, श्लोक 1)



सूर्यवंश भगवान् रामचन्द्र के पुत्र कुश के वंशजों के माध्यम से आगे बहता है — अतिथि, निषध, नभ, पुण्डरीक और उनके पश्चात् आने वाले राजा — प्रत्येक इक्ष्वाकु की पवित्र परम्परा को आगे ले जाते हुए (श्लोक 1-2)।

हिरण्यनाभ, योग के आचार्य

वज्रनाभ से खगण हुए, और उनसे विधृति; और विधृति से हिरण्यनाभ उत्पन्न हुए, योग के आचार्य एवं ऋषि जैमिनि के शिष्य। इन्हीं हिरण्यनाभ से कोसल के महान् ऋषि याज्ञवल्क्य ने आत्मा का आध्यात्मिक योग प्राप्त किया — महान् उन्नति का वह योग जो हृदय की अज्ञान-ग्रन्थि को काट देता है।

सगणस्तत्सुतस्तस्माद् विधृतिश्चाभवत् सुतः ।

ततो हिरण्यनाभोऽभूद् योगाचार्यस्तु जैमिनेः ॥ ३ ॥

शिष्यः कौशल्य आध्यात्मं याज्ञवल्क्योऽध्यगाद् यतः ।

योगं महोदयम् ऋषिर्हृदयग्रन्थिभेदकम् ॥ ४ ॥

sagaṇas tat-sutas tasmād vidhṛtiś cābhavat sutaḥ tato hiraṇyanābho 'bhūd yogācāryas tu jaimineḥ śiṣyaḥ kauśalya ādhyātmaṁ yājñavalkyo 'dhyagād yataḥ yogaṁ mahodayam ṛṣir hṛdaya-granthi-bhedakam

अर्थ: उनके पुत्र खगण थे, और उनसे विधृति हुए; विधृति से हिरण्यनाभ हुए, योग के आचार्य एवं जैमिनि के शिष्य। उन्हीं से कोसल के ऋषि याज्ञवल्क्य ने महान् उन्नति का आध्यात्मिक योग सीखा, जो हृदय की अज्ञान-ग्रन्थि को काट देता है। (नवम स्कन्ध, अध्याय 12, श्लोक 3-4)



एक राजा जो आत्मा के आचार्य भी थे: हिरण्यनाभ महान् ऋषि याज्ञवल्क्य को आत्मा का योग प्रदान करते हैं — वह पवित्र ज्ञान, गुरु से शिष्य को सौंपा जाता हुआ, जो हृदय की अज्ञान-ग्रन्थि को काट देता है (श्लोक 3-4)।

कलापग्राम के मरु

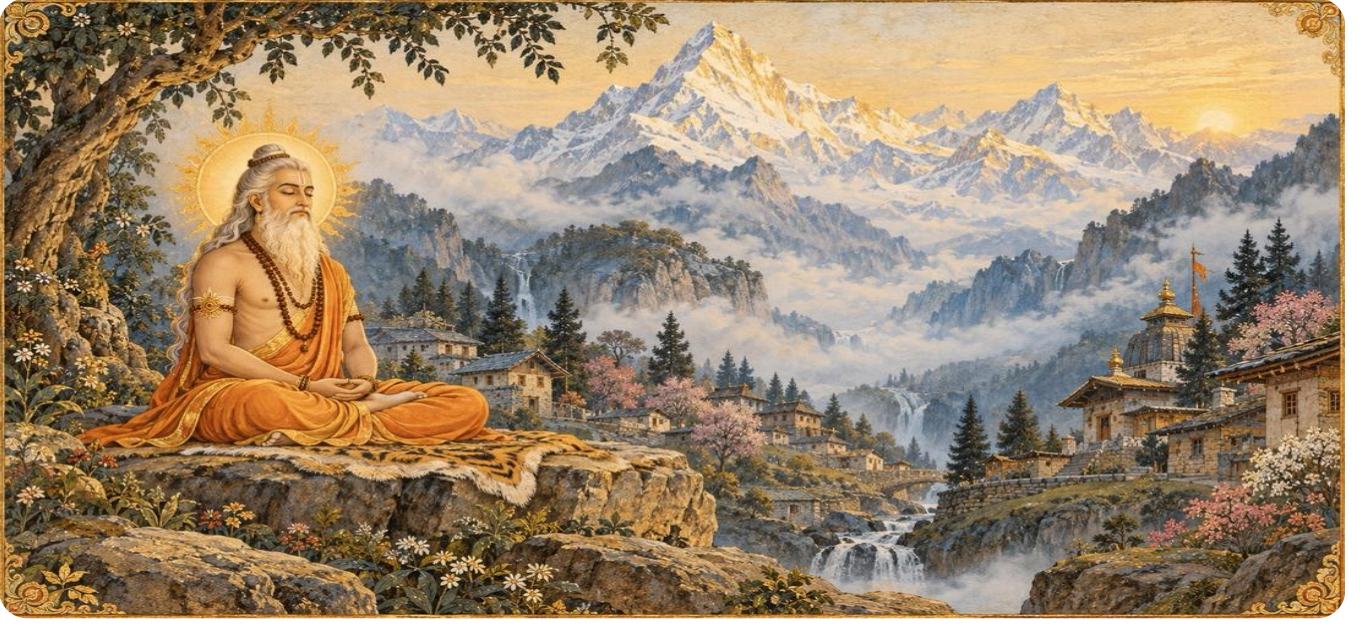
हिरण्यनाभ से पुष्प हुए, फिर ध्रुवसन्धि, सुदर्शन, अग्निवर्ण, शीघ्र, और फिर मरु। योग में सिद्ध, मरु अभी भी, शास्त्र कहता है, कलापग्राम में स्थित हैं — और वही हैं जो कलियुग के अन्त में, जब सूर्यवंश लुप्त हो चुका होगा, उसे पुनः जीवित करेंगे।

सोऽसावास्ते योगसिद्धः कलापग्राममास्थितः ।

कलेरन्ते सूर्यवंशं नष्टं भावयिता पुनः ॥ ६ ॥

so 'sāv āste yoga-siddhaḥ kalāpa-grāmam āsthitaḥ kaler ante sūrya-vaṁśam naṣṭam bhāvayitā punaḥ

अर्थ: वे, योग में सिद्ध, कलापग्राम में स्थित हैं; और कलियुग के अन्त में वे सूर्यवंश को, जब वह लुप्त हो चुका होगा, पुनः जीवित करेंगे। (नवम स्कन्ध, अध्याय 12, श्लोक 6)



योग में सिद्ध, राजर्षि मरु गुप्त कलापग्राम में गहन ध्यान में स्थित हैं — सूर्यवंश का सुरक्षित बीज, जो युग के अन्त में पवित्र परम्परा को नवीन करने हेतु रखा गया है (श्लोक 5-6)।

बृहद्वल और आने वाले राजा

मरु से प्रसुश्रुत हुए, फिर सन्धि, अमर्षण, महास्वान्, और विश्वबाहु; उनसे प्रसेनजित्, फिर तक्षक, और फिर बृहद्वल — जो युद्ध में मारे गए, शुकदेव ने परीक्षित को बताया, महायुद्ध में परीक्षित के अपने पिता अभिमन्यु के हाथों।

ततः प्रसेनजित् तस्मात् तक्षको भविता पुनः ।

ततो बृहद्वलो यस्तु पित्रा ते समरे हतः ॥ ८ ॥

tataḥ prasenajit tasmāt takṣako bhavitā punaḥ tato bṛhadbalo yas tu pitrā te samare hataḥ

अर्थ: उनसे प्रसेनजित् हुए, फिर तक्षक, और फिर बृहद्वल, जो युद्ध में, हे राजन्, आपके पिता के हाथों मारे गए। (नवम स्कन्ध, अध्याय 12, श्लोक 8)



सूर्यवंश के एक राजा बृहद्रथ महाभारत के महायुद्ध में राजा परीक्षित के पिता अभिमन्यु के हाथों गिरते हैं — एक स्मरण कि राजवंश भी काल के फेर के आगे नत होते हैं (श्लोक 8)।

तत्पश्चात् शुकदेव ने इस वंश में आने वाले राजाओं के नाम बताए: बृहद्रथ, उरुक्रिय, वत्सवृद्ध, प्रतिव्योम, भानु, सेनापति दिवाक, वीर सहदेव, बृहदश्व, भानुमान्, प्रतीकाश्व, सुप्रतीक, मरुदेव, सुनक्षत्र, पुष्कर, अन्तरिक्ष, सुतप, अमित्रजित्, बृहद्राज, बर्हि, कृतंजय, रणंजय, संजय, शाक्य, शुद्धोद, लांगल, प्रसेनजित्, क्षुद्रक, रणक, सुरथ, और अन्ततः सुमित्र — जिनके साथ वंश समाप्त होगा।

इक्ष्वाकूणामयं वंशः सुमित्रान्तो भविष्यति ।

यतस्तं प्राप्य राजानं संस्थां प्राप्स्यति वै कलौ ॥ १६ ॥

ikṣvākūṇām ayaṁ vaṁśaḥ sumitrānto bhaviṣyati yatas taṁ prāpya rājānaṁ saṁsthāṁ prāpsyati vai kalau

अर्थ: इक्ष्वाकुओं का यह वंश सुमित्र के साथ समाप्त होगा; क्योंकि उस राजा तक पहुँचकर यह वंश कलियुग में अपने अन्त को प्राप्त होगा। (नवम स्कन्ध, अध्याय 12, श्लोक 16)

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. पवित्र परम्परा युगों तक टिकती है। भगवान् राम के पुत्र कुश से सूर्यवंश अनेक पीढ़ियों तक बहता है — एक स्मरण कि संसार में भगवान् का कार्य उनके पश्चात् आने वालों के माध्यम से आगे बढ़ता है (श्लोक 1-2)।
2. सच्चा राजत्व सच्चे ज्ञान से जुड़ सकता है। हिरण्यनाभ एक राजवंशज एवं योग के आचार्य दोनों हैं, जो महान् याज्ञवल्क्य तक को शिक्षा देते हैं। सांसारिक पद एवं आध्यात्मिक सिद्धि परस्पर विरोधी नहीं; उच्चतम आत्माएँ दोनों धारण करती हैं (श्लोक 3-4)।

3. भगवान् प्रत्येक अन्धकार में एक बीज सुरक्षित रखते हैं। योग में सिद्ध मरु को कलापग्राम में रखा गया है ताकि सूर्यवंश को, जब वह लुप्त हो जाए, पुनर्जीवित करें। पतन कितना भी पूर्ण क्यों न प्रतीत हो, पवित्र कभी पूर्णतः नष्ट नहीं होता (श्लोक 5-6)।

4. महान् राजा भी काल के आगे नत होते हैं। बृहद्बल, कितने भी शक्तिशाली, युद्ध में गिरे; वंश स्वयं सुमित्र के साथ समाप्त होता है। प्रत्येक पार्थिव शक्ति युगों के फेर के अधीन है, और केवल भगवान् शाश्वत हैं (श्लोक 8, 16)।

5. जो सचमुच सौंपा जाता है वह ज्ञान है, केवल सिंहासन नहीं। इस अध्याय में एकमात्र वस्तु जो “अज्ञान-ग्रन्थि को काटती है” वह आत्मा का योग है, हिरण्यनाभ से याज्ञवल्क्य को सौंपा गया। नाम एवं राज्य मिट जाते हैं; हृदय को मुक्त करने वाली शिक्षा टिकती है (श्लोक 3-4)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

नामों का एक अध्याय, पहली दृष्टि में, एक शुष्क सूची-सा प्रतीत हो सकता है — फिर भी भागवत कभी बिना किसी कारण के कोई वंशावली नहीं लिखता। यहाँ सूर्यवंशी राजाओं की दीर्घ सूची, कुश से लेकर सुमित्र तक, हमें काल के स्वरूप को शान्तिपूर्वक सिखाती है: कैसे महानता सौंपी जाती है, कैसे वह हिरण्यनाभ जैसे ऋषि या बृहद्बल जैसे योद्धा में खिलती है, और कैसे अन्ततः सबसे यशस्वी वंश भी अपने अन्त को प्राप्त होता है। इस उत्थान-पतन की पृष्ठभूमि के विरुद्ध, दो व्यक्ति अलग खड़े हैं। एक हैं मरु, जो अपने युग के साथ लुप्त नहीं होते बल्कि, योग में सिद्ध, एक जीवित बीज के रूप में प्रतीक्षा करते हैं ताकि वंश को, जब वह चला जाए, नवीन करें — पवित्र का एक ऐसा चित्र जिसे कोई अन्धकार अन्ततः बुझा नहीं सकता। दूसरा है आत्मा का योग, इस अध्याय की एकमात्र सम्पदा जो प्रत्येक सिंहासन से अधिक टिकती है, सदियों तक गुरु से शिष्य को सौंपी जाती हुई। भागवत मृदुता से हमें स्मरण कराता है कि हम भी अपने जीवन से कहीं लम्बी एक श्रृंखला की कड़ियाँ हैं; और कि सौंपने योग्य, और पाने योग्य, एकमात्र सच्ची विरासत वही ज्ञान है जो हृदय की अज्ञान-ग्रन्थि को काटता है और हमें भगवान् से जोड़ता है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, हिरण्यनाभ से याज्ञवल्क्य को सौंपे गए ज्ञान की भावना में, अपने प्राप्त पवित्र ज्ञान का सम्मान करें। उस एक गुरु, वृद्धजन या शास्त्र का स्मरण करें जिसने सर्वप्रथम आपके हृदय को भगवान् की ओर मोड़ा, और उस उपहार के लिए एक क्षण की कृतज्ञता अर्पित करें। फिर उसे आगे बढ़ाएँ, चाहे कितना भी सरल रूप में — किसी छोटे या ज़रूरतमंद के साथ एक सच्चा एवं कोमल आध्यात्मिक विचार बाँटें, या अपने घर में शास्त्र की एक पंक्ति ऊँचे स्वर में पढ़ें — यह स्मरण करते हुए कि ज्ञान केवल तभी जीवित रहता है जब वह आगे सौंपा जाता है। ऐसा करते हुए, मृदुता से दोहराएँ, “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय,” और प्रार्थना करें कि आपके अपने हृदय की अज्ञान-ग्रन्थि ढीली हो, ताकि जो आप पाते हैं और जो आप देते हैं, दोनों आपको उस शाश्वत भगवान् के निकट लाएँ जो प्रत्येक युग से अधिक टिकते हैं।

उपसंहार

नवम स्कन्ध का बारहवाँ अध्याय भगवान् रामचन्द्र के पुत्र कुश से आरम्भ होकर इक्ष्वाकु के सूर्यवंश को कलियुग के अन्तिम राजा तक ले जाता है। यह एक निरी वंशावली प्रतीत होती है, परन्तु भागवत का अभिप्राय इससे कहीं अधिक है: नाम एवं सिंहासन मिट जाते हैं, किन्तु आत्मा का वह योग — जो हिरण्यनाभ ने याज्ञवल्क्य को दिया, जो हृदय की अज्ञान-ग्रन्थि को काटता है — प्रत्येक वंश से अधिक टिकता है, और कलापग्राम में मरु की मौन प्रतीक्षा दिखाती है कि कलियुग के घोरतम अन्धकार में भी पवित्र बीज कभी नष्ट नहीं होता। हम उस एकमात्र विरासत को सबसे ऊपर संजोएँ, और उसे श्रद्धापूर्ण हृदय से आगे सौंपें।

श्रीमद्भागवत का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति को जागृत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण, नवम स्कन्ध, द्वादश अध्याय।
- श्रृंखला: श्रीमद्भागवत विज्ञान · विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं संस्तुति के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेख के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-9-chapter-12-dynasty-of-kusa-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञान · कल्कि अवतार इंटरनेशनल · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट